



विज्ञान प्रगति

दिसम्बर 2015

प्रमुख सम्पादक
दीक्षा बिष्ट

सम्पादक
बालक राम

प्रोडक्शन अधिकारी

सुप्रिया गुप्ता
एस. पी. सिंह

कला अधिकारी
नीरू विजन

कम्पोजिंग
मीरा देवी

वरिष्ठ बिक्री एवं वितरण अधिकारी
लोकेश कुमार चोपड़ा



आवरण
नीरू विजन

मूल्य
एक अंक : 30.00 रुपये
एक वर्ष : 300.00 रुपये
दो वर्ष : 570.00 रुपये
तीन वर्ष : 810.00 रुपये
विदेशी वार्षिक सदस्यता : 65\$
शिकायत : 011-25841647
ई-मेल : lkc@niscair.res.in

सम्पादकीय : 011-25841769, 011-25846301, 04-07/370
प्रोडक्शन : 011-25847353, 25846301, 04-07/217, 337
विज्ञापन : 011-25843359
बिक्री : 011-25841647, 25846301, 04-07/286, 289
फैक्स : 011-25847062
ई-मेल : vp@niscair.res.in
वेब साइट : http://www.niscair.res.in

© राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान
लेखकों के कथनों और मतों के लिये सी.एस.आई.आर.
-राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान,
डॉ. के. एस. कृष्णन् मार्ग, नई दिल्ली - 110 012
उत्तरदायी नहीं है।
पत्रिका से संबंधित सभी विवाद दिल्ली न्यायालय द्वारा
ही निपटायें जायेंगे।

भारतीय अंतर्राष्ट्रीय अनुसंधान कार्यक्रम के जनक डॉ. विक्रम साराभाई की दूरदर्शिता का ही यह परिणाम है कि आज भारत अंतरिक्ष अनुसंधान के क्षेत्र में विकसित देशों की अग्रणी पंक्ति में आ खड़ा हुआ है।

यूं तो भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान को परमाणु ऊर्जा विभाग के अंतर्गत भारतीय परमाणु कार्यक्रम के जनक डॉ. होमी जहांगीर भाभा की देखरेख में आरम्भ किया गया। डॉ. भाभा ने 1962 में अंतरिक्ष अनुसंधान के लिये भारतीय राष्ट्रीय समिति यानी इनकोस्पास का गठन किया और इस समिति का सभापति डॉ. विक्रम साराभाई को नियुक्त किया। डॉ. साराभाई के नेतृत्व में अंतरिक्ष कार्यक्रम की स्थापना के बाद ही अनुसंधान रॉकेटों के प्रक्षेपण पर कार्य आरम्भ हुआ और भारत ने ठोस ईंधन का प्रयोग करके अपने अनुसंधान रॉकेट का निर्माण किया। जिसे 'रोहिणी' नाम दिया गया। जैसे-जैसे अंतरिक्ष कार्यक्रम बढ़ता गया अंतरिक्ष अनुसंधान को अलग सरकारी विभाग बना दिया गया। परिणामस्वरूप 1969 में इनकोस्पास कार्यक्रम से भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन यानी इसरो का गठन किया गया। अंततः जून 1972 में अंतरिक्ष आयोग और अंतरिक्ष विभाग की स्थापना की गई।

वैसे तो भारत के थुंबा रॉकेट प्रक्षेपण केन्द्र से अमेरिका के रॉकेट 'नाइक अपाचे' और फ्रांस के 'कैंटोर' का प्रक्षेपण वर्ष 1963 में ही किया जा चुका था परंतु पहले भारतीय उपग्रह आर्यभट्ट का प्रक्षेपण 1975 में किया गया। 1979 में भास्कर-1 का प्रक्षेपण भी सफल रहा, पर रोहिणी उपग्रह का पहले प्रायोगिक परीक्षण यान एस एल वी-3 की सहायता से प्रक्षेपण असफल रहा। परन्तु शीघ्र ही 1980 में एस एल वी-3 की सहायता से रोहिणी उपग्रह को सफलतापूर्वक कक्षा में स्थापित कर दिया गया। इसके बाद 'एप्पल', इन्सैट श्रृंखला, दूरसंवेदी उपग्रहों का प्रक्षेपण कार्यक्रम आरम्भ हुआ, जिनमें एक आध बार असफलता भी हाथ लगी। वर्ष 1984 में राकेश शर्मा भारत और सोवियत रूस के संयुक्त अंतरिक्ष अभियान के पहले भारतीय अंतरिक्ष यात्री बने, पर 1992 में पूरी तरह स्वदेशी तकनीक से बने उपग्रह इन्सैट-2 ए का सफल प्रक्षेपण अपने आप में एक बड़ी उपलब्धि रही। इसके बाद भारत का अंतरिक्ष कार्यक्रम आगे बढ़ता रहा और 1999 में इन्सैट-2 श्रृंखला के आखिरी उपग्रह इन्सैट-2 ई का फ्रांस से सफल प्रक्षेपण किया गया।

1999 में ही भारत में पहली बार विदेशी उपग्रहों का सफल प्रक्षेपण किया गया। इसके बाद तो अंतरिक्ष कार्यक्रम की प्रगति में चार चांद लग गये। जब 2008 को चन्द्रयान का प्रक्षेपण सफलतापूर्वक किया गया और वर्ष 2009 में हमारा चन्द्रयान मिशन सफल रहा। उसके बाद 2013 में मंगलयान का सफलतापूर्वक प्रक्षेपण किया गया और 24 सितम्बर 2014 में मंगलयान मंगल की कक्षा में स्थापित हो गया। जी एस एल वी डी-5, आई आर एन एस एस-1बी और 1-सी का सफल प्रक्षेपण और जी एस एल वी एम के-3 की पहली सफल प्रायोगिक उड़ान ने अंतरिक्ष अनुसंधान को नई ऊँचाइयों पर ला खड़ा किया। वर्ष 2015 में 29 सितम्बर को पहली वेधशाला एस्ट्रोसैट का सफल प्रक्षेपण खगोलीय शोध को समर्पित रहा और अब बात आ पहुंची है जी सैट-6 पर जो इसरो द्वारा निर्मित भारत का 25वां और जी सैट श्रृंखला का 12वां भूस्थैतिक संचार उपग्रह है जो स्थापित होने के बाद अन्य प्रचलित उपग्रहों का सहयोगी हो जायेगा। भारत के जी सैट उपग्रह संचार उपग्रह हैं जो डिजिटल ऑडियो, डेटा एवं वीडियो प्रसारण के लिए उपयोग किये जा रहे हैं। इन आधुनिकतम संचार उपग्रहों पर जानकारी आमुख कथा के माध्यम से आप तक पहुंचाई जा रही है।

विज्ञान प्रगति का यह अंक आपको कैसा लगा प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

दीक्षा बिष्ट